अध्याय 8

पर्यटन और परिवहन

वर्तमान में विकास की दौड़ के कारण हमारा जीवन बहुत ही अस्थिर हो गया है। ऐसे अनेक कारण हैं जिनकी वजह से मानव को एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना–जाना पड़ता है। जैसे–मनोरंजन, प्राकृतिक दृश्यों का आनंद, ऐतिहासिक स्थलों को देखना, संस्कृति संबंधी तथ्यों का अवलोकन, धार्मिक यात्रा, अध्ययन, खेलकूद, स्वास्थ्य, कार्यालय कार्य, व्यापार, सम्मेलन, अभियान, पारिवारिक कार्य आदि के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर की गयी यात्रा पर्यटन कहलाती है, अर्थात् हम कह सकते हैं कि पर्यटक एक ऐसा व्यक्ति है जो अपने सामान्य दैनिक जीवन के माहौल से अलग किसी अन्य स्थान पर कुछ समय के लिए अस्थाई रूप से रहता है। अपना उद्देश्य पूरा होने के बाद वह पुनः अपने मूल स्थान पर लौट आता है।

हमारा राजस्थान पर्यटन के क्षेत्र में ना केवल भारत में बल्कि संपूर्ण विश्व में विख्यात है। इसीलिए ऐसा अनुमान है कि भारत में आने वाला हर तीसरा विदेशी पर्यटक राजस्थान में आता है। राजस्थान में मरुस्थल एवं अरावली जैसे भौतिक स्वरूप, वन्य जीव, ऐतिहासिक घटनाओं का गौरवमयी इतिहास, स्थापत्य कला, मेले, सांस्कृतिक विविधताएँ आदि पर्यटकों को आकर्षित करते रहे हैं। यही कारण है कि यह राज्य भारत का एक प्रमुख पर्यटक राज्य है। लोक संगीत, नृत्य, कला आदि राजस्थान की सांस्कृतिक विविधताओं के बारे में जानने और सीखने के उद्देश्य से भी यहाँ काफी पर्यटक आते हैं।

हम एक ही स्थान पर रहकर प्रतिदिन एक जैसे कार्य करते हैं जिससे हमारा जीवन उबाऊ एवं तनाव ग्रस्त हो जाता है। इससे छुटकारा पाने एवं अपने जीवन में फिर से जोश भरने के लिए मनुष्य अपने मूल निवास स्थान से दूर किसी अन्य स्थान पर जाना पसंद करता है। अपनी मानसिक संतुष्टि एवं मनोरंजन के लिए घूमना, प्रकृति के सुहावने स्थानों की खूबसूरत छवियों को निहारना, खेलना, नए लोगों से मिलना एवं उनकी संस्कृति, रहन–सहन, खान–पान को जानना आदि हमारे तनाव भरे जीवन को आनंद में बदल देता है। किसी अन्य स्थान पर जाने से पहले कई प्रश्न हमारे सामने आ जाते हैं कि हम नए स्थान पर जाने के लिए यात्रा कैसे करेंगे? नए स्थान पर कहाँ रहेंगे? वहाँ हमारी मदद कौन करेगा? लेकिन इन प्रश्नों को लेकर घबराने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि परिवहन के साधन, गाइड, होटल, रेस्तराँ आदि हमारी मदद करते हैं और पर्यटन को आनंददायक बना देते हैं।

पर्यटन से हमें अनेक प्रकार के लाभ होते हैं। पर्यटन हमारी आय को बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, इसलिए हम देशी–विदेशी मुद्रा कमाने के लिए पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। होटल तथा रेस्तराँ के मालिक एवं कर्मचारी, गाइड, वाहनों के ड्राइवर, परिवहन एजेंट, व्यापारी, उद्योग और इनसे संबंधित अन्य क्षेत्रों में रोजगार बढ़ना भी पर्यटन का एक प्रमुख लाभ है। साथ ही पर्यटन जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर है उसको भी संरक्षण मिलता है और प्रचार–प्रसार होता है। विदेशी पर्यटकों को भारत की ओर आकर्षित करने के लिए सरकार ने **'अतुल्य भारत'** नामक एक कार्यक्रम तैयार किया है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान में सन् 1979 में राजस्थान पर्यटन विकास निगम (R.T.D.C.) की स्थापना की गयी है। साथ ही 'पधारो म्हारे

मानचित्र पैमाने पर आधारित नही है।

देश', 'राजस्थान पधारिये', 'रंगीलो राजस्थान', 'सुरंगा राजस्थान' आदि नारे दिये गये हैं। 'भारत का अतुल्य राज्य' (The Incredible State of India) राजस्थान का पर्यटन प्रतीक है।

पर्यटकों की सुविधा के लिए राजस्थान को अलग–अलग पर्यटक मंडलों (सर्किट) में बाँट दिया है। जिनमें से जयपुर–आमेर सर्किट, मरु सर्किट एवं मेवाड़ सर्किट अधिक महत्वपूर्ण हैं, जहाँ देशी व विदेशी पर्यटक अधिक आते हैं। राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है–ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थल।

पर्यटन प्रतीक
(Logo)

ऐतिहासिक पर्यटन स्थल

विजय स्तंभ

राजस्थान का इतिहास अत्यंत गौरवपूर्ण रहा है इसीलिए राज्य के लगभग सभी क्षेत्रों में ऐतिहासिक महत्व के पर्यटक स्थल पाए जाते हैं। पुरातात्विक पर्यटन स्थलों के रूप में हनुमानगढ़ में कालीबंगा एवं पीलीबंगा, उदयपुर में आहड़, जयपुर में बैराठ और सीकर में गणेश्वर प्रसिद्ध हैं। जयपुर में हवामहल, आमेर का किला, जंतर–मंतर, चित्तौड़गढ़ का विजयस्तम्भ एवं कीर्तिस्तम्भ, राजसमन्द स्थित कुम्भलगढ़ का किला, उदयपुर का सज्जनगढ़ किला और सिटी पैलेस, जोधपुर में मेहरानगढ़ किला, जैसलमेर का सोनारगढ़ किला आदि प्रमुख ऐतिहासिक पर्यटन स्थल हैं। इनका विस्तृत अध्ययन इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में किया गया है।

आओ करके देखें–

आपके जिले में स्थित ऐतिहासिक स्थलों की सूची बनाकर उनसे सम्बंधित जानकारी एकत्र कीजिए।

प्राकृतिक पर्यटन स्थल

राजस्थान की भौगोलिक बनावट एवं प्राकृतिक छटाओं के बीच जैसलमेर में मनमोहक रेत के टीले (धोरे), झीलों की नगरी उदयपुर में जयसमंद, फतेहसागर, पिछोला, उदयसागर आदि झीलें एवं शिल्पग्राम, सिरोही का प्रसिद्ध पर्वतीय स्थल माउण्ट आबू एवं नक्की झील, अजमेर की पुष्कर झील, राजसमंद में स्थित राजसमंद झील, चित्तौडगढ़ में चुलिया एवं मेनाल जल प्रपात, सवाईमाधोपुर का रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान, अलवर का सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर का केवलादेव घना राष्ट्रीय पक्षी विहार, जैसलमेर एवं बाड़मेर में स्थित राष्ट्रीय मरु उद्यान, कोटा में चम्बल नदी के किनारे घड़ियाल तथा मगरमच्छों के संरक्षण के लिए चम्बल अभयारण्य प्रमुख है।

आओ करके देखें–

आपके जिले में स्थित भौगोलिक पर्यटक स्थलों की सूची बनाकर उनसे सम्बंधित जानकारी एकत्र कीजिए।

रणथम्भौर अभयारण्य में बैठे बाघ

केवलादेव घना पक्षी राष्ट्रीय उद्यान

धार्मिक पर्यटन स्थल

राजस्थान के रीति–रिवाजों व लोक संस्कृति में धर्म का बहुत महत्व है। यहाँ के तीर्थ स्थल पर्यटन के प्रमुख केन्द्र माने जाते हैं। राज्य में ब्रह्माजी का मंदिर (पुष्कर), ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह (अजमेर), कोलायत (बीकानेर), रामदेवरा (जैसलमेर), नाथद्वारा में श्रीनाथ जी (राजसमन्द), एकलिंग जी (उदयपुर), गोविन्ददेवजी (जयपुर), करणीमाता देशनोक (बीकानेर), श्री महावीर जी (सवाईमाधोपुर), त्रिपुरा सुंदरी (बाँसवाड़ा) आदि मुख्य धार्मिक पर्यटन स्थल हैं। ऋषभदेव (उदयपुर), रणकपुर (पाली) और देलवाड़ा (सिरोही) के जैन मन्दिर भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। पर्यटन व्यवसाय राज्य में रोजगार का प्रमुख स्रोत है।

रामदेवजी मंदिर

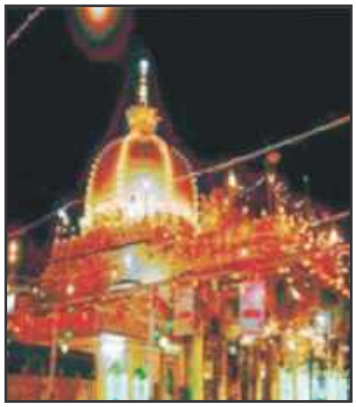
अजमेर दरगाह

रणकपुर का जैन मंदिर

आओ करके देखें–

आपके जिले में स्थित धार्मिक पर्यटक स्थलों की सूची बनाकर उनसे सम्बंधित जानकारी एकत्र कीजिए।

पर्यटन का विकास

राजस्थान पर्यटन विकास निगम की स्थापना के अतिरिक्त राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 1989 में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया। पर्यटन एक सेवा उद्योग है। पर्यटन के विकास के लिए राज्य में होटल निर्माण एवं पेईंग गेस्ट योजना संचालित है। परिवहन के लिए आरक्षण, गाइड, टैक्सी, प्रमुख पर्यटन स्थलों की जानकारी आदि इन्टरनेट पर उपलब्ध है, ताकि पर्यटक इन सब की जानकारी जुटा सके। प्रमुख दर्शनीय स्थानों को सड़क मार्ग, रेल मार्ग एवं हवाई मार्गों से जोड़ने का प्रयास किया गया है। 'रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स' जैसी शाही रेलगाड़ी जो प्रमुख पर्यटक स्थलों की सेर करवाती हैं। सभी तरह की अत्याधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न यह शाही रेलगाड़ी देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करती है। दिल्ली से शुरू होने वाली यह रेलगाड़ी राजस्थान में जोधपुर, चित्तौडगढ़, उदयुपर, जयपुर एवं रणथंभौर से होकर आगे मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश में चली जाती है। राज्य में उपलब्ध यात्रा की सुविधा, लोककला, लोकनृत्य, लोकगीत, पारम्परिक वेशभूषा आदि ने पर्यटन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स रेलगाड़ी

आओ करके देखें–

राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए महोत्सव आयोजित किए जाते हैं। अपने शिक्षक एवं पत्र–पत्रिकाओं की सहायता से इनकी जानकारी एकत्र कीजिए।

परिवहन का अर्थ एवं प्रकार

किसी भी क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए आधारभूत संरचनात्मक ढाँचे (उद्योग, दूर संचार, विद्युत, परिवहन एवं अन्य आर्थिक गतिविधियाँ आदि) का विकास होना अत्यंत आवश्यक है। अतः विकास के लिए परिवहन भी एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। आधुनिक समय में परिवहन के साधनों के विस्तार को ही आर्थिक विकास एवं समृद्धि का सूचक माना जाता है।

क्या आप जानते हैं

राजस्थान रोड विजन 2025 के अनुसार इस सदी के पहले 25 सालों में सड़कों का विस्तार एवं उचित देखभाल कर सड़कों की गुणवत्ता को बनाए रखा जायेगा। इस के अन्तर्गत राज्य में एक्सप्रेस हाईवे बनाना, फ्लाई ओवर बनाना, राज्य के प्रमुख शहरों को रिंग रोड द्वारा जोड़ना एवं सभी गाँवों को सड़को से जोड़ने की योजना हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि परिवहन है क्या? एक स्थान से दूसरे स्थान तक मानव, वस्तुओं एवं विचारों के आदान–प्रदान को परिवहन कहा जाता है। परिवहन का महत्त्व हम इस बात से समझ सकते हैं कि इसे क्षेत्र की 'रक्त वाहिनियाँ' कहा जाता है। परिवहन के अभाव में मनुष्य अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता है। कल कारखानों तक कच्चा माल और उत्पादित वस्तु को उपभोक्ता तक पहुँचाना परिवहन के बिना संभव नहीं है। शीघ्र खराब होने वाली सामग्री परिवहन के बिना खराब हो जाएगी और उसकी उपयुक्त कीमत नहीं मिल पाएगी। अतः परिवहन एक ऐसी सेवा है जिसे आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था की 'जीवन रेखा' कहा जा सकता है।

राजस्थान में परिवहन के मुख्य साधन सड़क, रेल एवं हवाई यातायात हैं। साथ ही पाइप परिवहन द्वारा तरल एवं गैसीय वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाता है। हमारे घर पर पाइप लाइन द्वारा नल से आने वाला पानी इसका उदाहरण है। राज्य में जल परिवहन के विकास की संभावनाएँ अत्यंत कम हैं, क्योंकि राज्य की सीमा समुद्रों से नही मिलती है और नदियाँ छोटी व अनित्यवाही है। अतः इनमें जहाज चलाना कठिन है।

सड़क परिवहन

राजस्थान में सड़क परिवहन का ही सर्वाधिक विकास हुआ है। राज्य का अधिकांश परिवहन सड़कों के माध्यम से ही पूरा होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो सड़क परिवहन ही सबसे महत्वपूर्ण है। सरकार के द्वारा पिछलें कुछ दशकों में सड़कों का तेजी से विकास किया गया है जो वर्तमान में भी जारी है। राज्य में स्थित सड़कों को राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्यीय राजमार्ग, जिला सड़के, ग्रामीण सडकें आदि में वर्गीकृत किया जाता है। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क निर्माण परियोजना द्वारा विभिन्न गाँवों को सड़कों से जोड़ दिया गया है।

राष्ट्रीय राजमार्ग का दृश्य

राज्य से होकर कई राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरते हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 राज्य का सबसे व्यस्ततम एवं महत्वपूर्ण राजमार्ग है। राज्य के मध्य से गुजरने वाला यह राजमार्ग दिल्ली से मुम्बई को जोड़ता है। राज्य में सर्वाधिक लंबाई राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 15 की है जो पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्र में स्थित है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 14 एवं 15 राज्य को गुजरात के कांडला बंदरगाह से जोड़ते हैं।

आओ करके देखें–

1. राजस्थान के अन्य प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग कौन–कौन से हैं? अपने शिक्षक एवं परिवहन मानचित्र की सहायता से पता लगाकर रूपरेखा मानचित्र में दर्शाइए।
2. आपके जिले से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग/राजमार्गो की सूची बनाकर उनके बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।

सड़क सुरक्षा

प्रातःकाल चाय के प्याले के साथ अखबार पढ़ते ही पता लगता है कि सड़क पर दुर्घटना हो गई जिससे कुछ व्यक्ति मारे गए। इसका तात्पर्य है हमसे गाड़ी चलाने में कहीं न कहीं चूक हुई है। आपने एक कहावत तो सुनी होगी कि 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी'। अतः हमें सड़क पर अत्यंत सावधानी पूर्वक चलना चाहिए तथा सड़क पर लगे हुए सड़क सुरक्षा संबंधी चिह्नों एवं यातायात नियमों का ध्यान रखना चाहिए–

1. सड़क पार करते समय जेबरा क्रासिंग का प्रयोग करना।
2. गाड़ी निर्धारित गति से चलाना।
3. शराब पीकर गाड़ी नहीं चलाना।
4. यातायात बत्ती का पालन करना।
5. वाहन अपनी कतार (Lane) में चलाना।
6. सड़क पर मुड़ने के लिए संकेतक का उपयोग करना।
7. दुपहिया वाहन पर हेलमेट एवं चौपहिया वाहन में सीट बेल्ट का उपयोग करना।

8. ओवर टेक दाहिनी तरफ से सावधानीपूर्वक करना।
9. वाहन चलाते समय मोबाइल पर एवं अन्य व्यक्ति से बात नहीं करना।
10. रात्रि में वाहन चलाते समय संकेतकों (Indicator and Dipper) का प्रयोग करना।
11. वाहन में तेज आवाज में संगीत नहीं बजाना।
12. वाहन चलाते समय दूसरे वाहन से पर्याप्त दूरी रखना, आदि।

भारतमाला परियोजना

भारत सरकार द्वारा देश में सड़कों के विकास के लिए एक नवीन 'भारतमाला' परियोजना की घोषणा की है। इस परियोजना में लगभग हजारों किलोमीटर लंबी सड़कों का विकास करने की योजना है जो राजस्थान सहित भारत के सभी सीमावर्ती राज्यों, पंजाब, जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, बिहार, सिक्किम, असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर होते हुए मिजोरम आदि में बनाई जाएगी। सामरिक महत्त्व को देखते हुए इस परियोजना का लगभग 1500 किलोमीटर का हिस्सा राजस्थान के सीमावर्ती (पाकिस्तान) भाग से होकर गुजरेगा।

आओ करके देखें–

भारत के राजनीतिक रूपरेखा मानचित्र में भारतमाला सड़क गुजरने वाले राज्यों को दर्शाइए।

रेल परिवहन

स्थल पर लंबी दूरी तक अधिक मात्रा में तथा भारी वस्तुओं के परिवहन के लिए रेल परिवहन सबसे अच्छा एवं सस्ता परिवहन का साधन है। भारत में पहली रेल सन् 1853 में महाराष्ट्र के मुम्बई एवं थाणे के बीच चलाई गई थी। उसके बाद अन्य राज्यों में इसका धीरे–धीरे विकास होता गया। राजस्थान में पहली रेल सन् 1874 में बांदीकुई (दौसा) से आगरा फोर्ट (उत्तर प्रदेश) के बीच चलाई गई थी। तब से राज्य में लगातार रेल परिवहन का विकास हो रहा है। राज्य में रेलमार्ग की कुल लम्बाई लगभग 6000 कि.मी. है। राजस्थान का रेल परिवहन भारत के उत्तरी–पश्चिमी रेलवे मंडल में सम्मिलित है, जिसका मुख्यालय जयपुर है। राजधानी होने के कारण राज्य में रेलवे परिवहन का सबसे बड़ा केंद्र भी जयपुर ही है। जयपुर में उत्तम शहरी यातायात के लिए मेट्रो रेल की शुरूआत जून 2015 से की गई है।

राजस्थान का अधिकांश भाग मरुस्थलीय एवं पर्वतीय होने के कारण यहाँ रेल परिवहन का विकास अपेक्षाकृत कम ही हुआ है। लेकिन खनिजों की उपलब्धता और बढ़ते औद्योगिक विकास के कारण रेल परिवहन के विकास की राज्य में अच्छी संभावनाएँ मौजूद हैं।

आओ करके देखें–

आपके जिले में स्थित रेलमार्गों एवं रेलवे स्टेशनों की सूची बनाइए।

वायु परिवहन

यह सबसे मँहगा तथा तीव्र परिवहन का साधन है जो शीघ्र खराब होने वाली एवं मूल्यवान वस्तुओं के लिए परिवहन की अच्छा साधन है। लागत अधिक होने के कारण राज्य में इसका विकास अपेक्षाकृत कम ही

हुआ है। वर्तमान में औद्योगीकरण और विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे विकास के लिए राजस्थान में वायु परिवहन की सुविधाओं को विकसित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। जयपुर अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा साँगानेर में स्थित है जो राज्य का सबसे व्यस्ततम व पहला अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है। उदयपुर के डबोक में महाराणा प्रताप हवाई अड्डा स्थित है। सैनिक एवं नागरीक महत्व का एक हवाई अड्डा जोधपुर के रातानाडा में भी है। जैसलमेर एवं अजमेर में भी हवाई अड्डे बन रहे हैं।

जयपुर अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा

शब्दावली

अभ्यारण्य	–	वन्य जीवों का उन्मुक्त आवास क्षेत्र
स्थापत्य कला	–	भवन निर्माण कला
राष्ट्रीय राजमार्ग	–	केन्द्र सरकार के अधीन सड़कें
राज्यीय राजमार्ग	–	राज्य सरकार के अधीन वाली सड़कें
मैट्रो रेल	–	महानगरों में स्थानीय परिवहन के लिए उपयोगी रेल

अभ्यास प्रश्न

1. सही विकल्प को चुनिए–

(i) राजस्थान में ब्रह्माजी का मन्दिर स्थित है–

(क) अजमेर (ख) पुष्कर

(ग) पाली (घ) करौली ( )

(ii) जयसंमद झील कौनसे जिले में स्थित है।

(क) उदयपुर (ख) चित्तौड़गढ

(ग) बाड़मेर (घ) जालौर ( )

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

   अ. जयपुर में उत्तम शहरी यातायात के लिए ..... की शुरूआत जून 2015 से की गई है।

   ब. सड़क पार करते समय ..... क्रॉसिंग का प्रयोग करना।

   स. पर्यटन एक ..... उद्योग है।

   द. केवलादेव घना राष्ट्रीय पक्षी विहार .....जिले में स्थित है।

3. राजस्थान का प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा कहाँ स्थित है?

4. राजस्थान में प्रथम रेल कब व कहाँ चली थी?

5. भारतमाला योजना क्या है? समझाइए।

6. पर्यटन किसे कहते हैं ? आर्थिक दृष्टि से पर्यटन का क्या महत्व है?

7. राजस्थान में प्रमुख पर्यटन स्थान कौन–कौन से हैं?

8. राजस्थान में सड़क परिवहन पर एक लेख लिखिए।